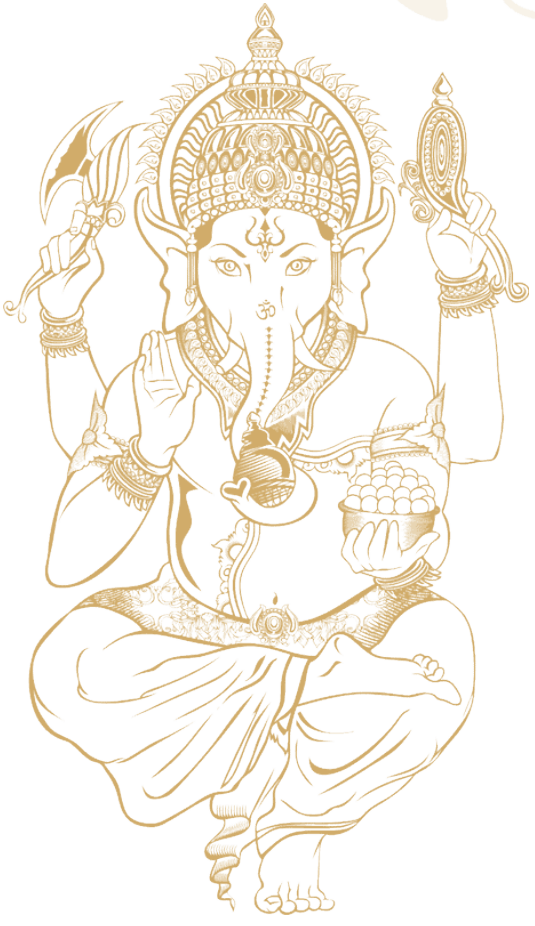

Mr.vishal

Ms.namita

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119352903

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
09/01/1994	जन्म तिथि	14-15/03/1993
रविवार	दिन	रवि-सोमवार
घंटे 14:57:00	जन्म समय	02:32:00 घंटे
घटी 19:30:28	जन्म समय(घटी)	49:48:24 घटी
India	देश	India
Indore	स्थान	Dewas
22:42:00 उत्तर	अक्षांश	22:59:00 उत्तर
75:54:00 पूर्व	रेखांश	76:03:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:24	स्थानिक संस्कार	-00:25:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:08:48	सूर्योदय	06:36:05
17:57:31	सूर्यास्त	18:34:21
23:46:41	चित्रपक्षीय अयनांश	23:46:01

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 9वर्ष 7मा 4दि		13:52:42	वृष	लग्न	धनु	18:53:07	बुध 3वर्ष 10मा 23दि	
शुक्र		25:06:52	धनु	सूर्य	मीन	00:31:34	सूर्य	
15/08/2010		22:28:25	वृश्चि	चंद्र	वृश्चि	26:56:36	06/02/2024	
15/08/2030		21:42:39	धनु	मंगल	मिथु	19:00:37	05/02/2030	
शुक्र	14/12/2013	28:31:03	धनु	बुध व	कुंभ	19:31:51	सूर्य	25/05/2024
सूर्य	15/12/2014	17:12:14	तुला	गुरु व	कन्या	17:59:18	चन्द्र	24/11/2024
चन्द्र	14/08/2016	23:16:37	धनु	शुक्र व	मीन	26:00:27	मंगल	01/04/2025
मंगल	14/10/2017	04:03:31	कुंभ	शनि	कुंभ	01:03:11	राहु	24/02/2026
राहु	14/10/2020	08:28:07	वृश्चि व	राहु	वृश्चि	22:19:44	गुरु	13/12/2026
गुरु	15/06/2023	08:28:07	वृष व	केतु	वृष	22:19:44	शनि	25/11/2027
शनि	15/08/2026	28:17:45	धनु	हर्ष	धनु	27:40:25	बुध	30/09/2028
बुध	15/06/2029	26:59:58	धनु	नेप	धनु	26:58:12	केतु	05/02/2029
केतु	15/08/2030	03:32:48	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	01:40:47	शुक्र	05/02/2030

लग्न-चलित

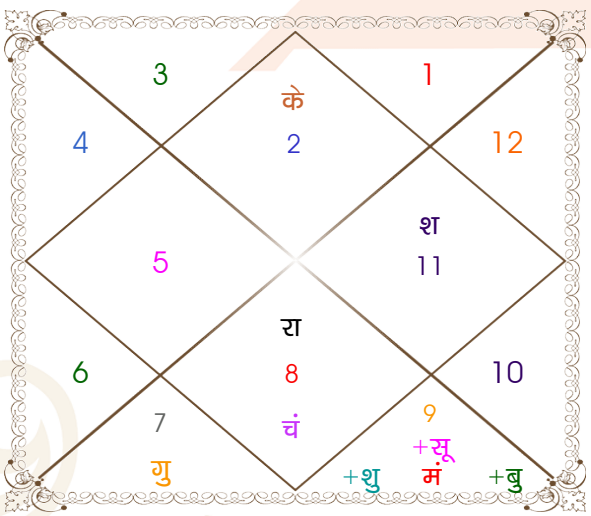

लग्न-चलित

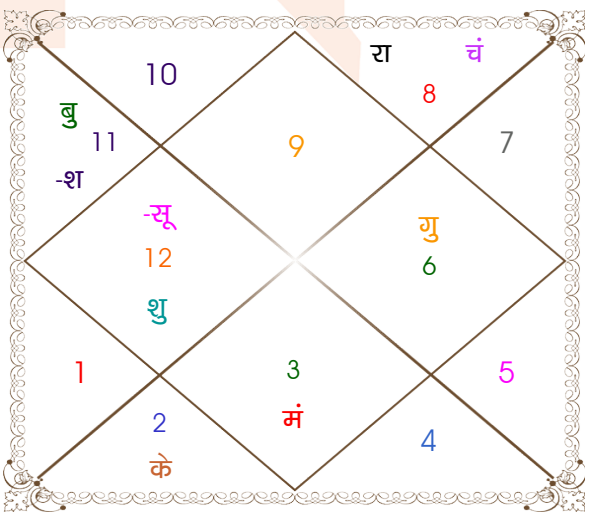

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	कीटक	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मृग	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

डतण्अर्पीस का वर्ग मृग है तथा डेण्दंउपजं का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्अर्पीस और डेण्दंउपजं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्अर्पीस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

डेण्दंउपजं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण्दंउपजं कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डतण्अर्पीस कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्अर्पीस तथा डेण्दंउपजं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।